कोरोना काल ऑक्सीजन घोटाला: जांच दबाए बैठे हैं रेडक्रॉस अधिकारी

ठंडे बस्ते में चली गई विजिलेंस जांच

मुख्य आरोपी विमल खंडेलवाल

फरीदाबाद (मज़दूर मोर्चा) जनसेवा का ढिंढोरा पीटने वाली रेडक्रॉस सोसायटी के पदाधिकारियों ने कोरोना महामारी में ऑक्सीजन के लिए मरते लोगों से भी लाखों रुपये ऐंठे। सिक्योरिटी के नाम पर प्रति सिलिंडर दस हजार रुपये वसूल कर आपस में बंदरबांट कर डाली। उससे भी खराब यह हुआ कि इस लूट कमाई की जांच भी अधिकारियों ने ठंडे बस्ते में डाल दी। विजिलेंस भी दो पंद्रह महीने में सच्चाई तक नहीं पहुंच सकी है।

कोरोना की दूसरी लहर ने महामारी का रूप ले लिया था। अस्पतालों में मरीजों की मौत ऑक्सीजन की कमी से हो रही थी। जरूरतमंद मरीजों को निशुल्क सिलिंडर उपलब्ध कराने के लिए हरियाणा सरकार ने एक एप जारी किया था। जरूरतमंद व्यक्ति इस एप पर पंजीकरण करा, मरीजो को ऑक्सीजन देने की डॉक्टर की सलाह पर्ची आदि का ब्यौरा भर कर ऑक्सीजन सिलिंडर के लिए आवेदन कर सकते थे। आवेदन के आधार पर जिला रेडक्रॉस सोसायटी मरीज को ऑक्सीजन सिलिंडर मुहैया कराती।

आरटीआई कार्यकर्ता रवींद्र चावला कहते हैं कि सोसायटी के पदाधिकारियों ने यहीं पर खेल किया। उनका आरोप है कि मरीज के परिजनों से सिलिंडर की सिक्योरिटी के रूप में दस हजार रुपये जमा करवाए गए। यह रुपये रेडक्रॉस सोयायटी के बैंक खाते में नहीं लिए गए, न ही इनकी रसीद काट कर दी गई बल्कि रेडक्रॉस सोसायटी के आजीवन सदस्य विमल खंडेलवाल के मोबाइल नंबर पर मंगाए गए। यह खेल तत्कालीन सचिव विकास, जितेन शर्मा और विमल खंडेलवाल की मिलीभगत से हुआ।

रेड क्रॉस के आंकड़ों के अनुसार एप पर फरीदाबाद के २२६२ लोगों ने ऑक्सीजन के लिए आवेदन किया था। चावला कहते हैं कि इनमें से अधिकतर लोगों से सिक्योरिटी के नाम पर निजी खाते में रकम डलवाई गई। सिलिंडर लौटाने के बाद सिक्योरिटी राशि वापस नहीं दी गई। इस तरह लाखों रुपयों की बंदरबांट की गई।

इस घोटाले की शिकायत सामाजिक कार्यकर्ता धर्मवीर ने डीसी से लेकर आला अधिकारियों तक की थी लेकिन कोई कार्रवाई नहीं हुई। अंत में उन्होंने मुख्यमंत्री को शिकायती पत्र भेजा तो मार्च २०२२ में मामले की विजिलेंस जांच कराने के आदेश हुए।

धर्मवीर कहते हैं कि वह तब से कई बार विजिलेंस कार्यालय में हाजिर हो चुके हैं लेकिन जांच बढ़ी नहीं है। उनका आरोप है कि इस सरकार में किसी भ्रष्टाचार के खिलाफ कार्रवाई करवाना आसान नहीं है। सरकार जो चाहती है वही होता है, यह सरकार पीटती है और रोने भी नहीं देती। विजिलेंस वाले न तो कोई कार्रवाई कर रहे हैं और न ही कुछ बताते हैं।

रवींद्र चावला ने भी एक जून २०२१ को आरटीआई डाली। जवाब नहीं मिलने पर उन्होंने इसकी पहली और दूसरी अपील भी की। राज्य सूचना आयोग में तत्कालीन सचिव विकास ने बताया कि उन्होंने रवींद्र चावला को जुलाई २०२१ को रजिस्टर्ड डाक से जवाब भेज दिया था। रवींद्र चावला ने आयोग को बताया कि उन दिनों लॉकडाउन होने के कारण डाकखाने बंद थे, और रजिस्टर्ड डाक भेजने की रसीद मांगी। दूसरी पेशी में आयोग को बताया गया कि क्योंकि डाकघर बंद थे इसलिए जवाबी पत्र में डाकटिकट लगा कर डाकपेटी में डलवा दिया गया था। १० मई २०२३ को हुई पेशी में भी विकास जवाब भेजे जाने का कोई सुबूत पेश नहीं कर सके, लेकिन उन्होंने आरटीआई का जवाब रवींद्र चावला को उपलब्ध करा दिया है।

Paytm
MM
Majdoor Morcha
UPI ID: 8851091460@paytm
8851091460
Scan this QR or send money to 8851091460 from any app. Money will reach in Majdoor Morcha's bank account.

केवल पाठकों के दम पर चलने वाले इस अखबार को सहयोग देकर अपनी आवाज को बुलंद रखें।

मज़दूर मोर्चा- खाता संख्या- 451102010004150
IFSC Code : UBIN0545112
Union Bank of India, Sector-7, Faridabad

घर बैठे प्राप्त करें मज़दूर मोर्चा

आज ही अपने हॉकर से कहें, कोई दिक्कत हो तो शर्मा न्यूज एजेंसी से फोन नं 9811159238 पर बात करें। बल्लबगढ़ के पाठक अरोडा न्यूज एजेंसी से 9811477204 पर बात करें।

अन्य बिक्री केन्द्र :
1. प्रिंट फोर्ट, टेलीफोन एक्सचेंज के सामने नेहरू ग्राउंड।
2. रेलवे बुक स्टाल ओल्ड रेलवे स्टेशन
3. एनआईटी रेलवे स्टेशन के बाहर बाटा चौक पुल के नीचे।
4. जितेन्द्र, बाटा सेंटर - 9971064207
5. मोती पाहुजा - मिनार गेट पलवल, 9255029919
6. सुरेन्द्र बघेल-बस अड्डा होडल - 9991742421

छुटभैया नेता कर रहे हैं बड़े नेताओं की तरह ढोंग

सोशल मीडिया के माध्यम से अपने आपको दिखा रहे हैं बड़े नेता

फरीदाबाद (विकास शर्मा) राजनीति में कोई भी छोटा या बड़ा नेता अपने आप में किसी से कम नहीं समझता है। चाहे इन छुटभैये और बड़े नेताओं में कितनी ही सामाजिक आर्थिक व वैचारिक असमानता क्यों ना हो लेकिन इनके मुंह से बड़े नेता के प्रति यह सुनने को मिलता है कि भाई वक्त की बात है हम दोनों हैं तो बराबर के लेकिन आज हम कहां और वह कहां है।

आजकल यह देखने में आ रहा है कि कुछ छुटभैया नेता वास्तव में बड़े नेताओं की तरह सोशल मीडिया के माध्यम से जनता का प्रतिनिधि होने का ढोंग करने मे लगे हुए हैं। ये नेता धरातल पर कहीं नजर नहीं आते, फिर भी बड़े नेताओं की नकल करते हुए अपने लिए कार्यकर्ताओं की टीम खड़ी करने लगे हुए हैं। ये छुटभैया नेता 10 से 12 कार्यकर्ता को एक टीम के रूप में सोशल मीडिया के सामने ऐसे प्रस्तुत करते हैं मानो किसी बड़े नेता की टीम हो। ये छुटभैये अपने मुट्ठी भर कार्यकर्ताओं के जन्मदिन, शादी की सालगिरह, उनके घर आए हुए नन्हे मेहमान का आगमन व वाहन खरीदने जैसे कार्यों का केक काटकर सोशल मीडिया पर इन कार्यक्रमों को इतना बड़ा चढ़ा कर प्रस्तुत करते हैं मानो वह उनके कितने बड़े हितेषी हैं।

छुटभैया नेता अपने वार्ड में होने वाले किसी कार्य को ऐसे सोशल मीडिया पर प्रस्तुत करते हैं जैसे कि उसका समाधान इन्होंने ही करवाया है और वह किसी बड़े नेता से कम नहीं हैं। ऐसे छुटभैया नेता आमतौर पर हर वार्ड में देखने को मिल जाते हैं। परंतु उनकी एक बात यह देखने को मिलती है कि वह यह भी कहने से नहीं हिचकिचाते कि उनके आकाओं के निर्देश पर अमुक समस्या का समाधान हुआ है।

बड़े आकाओं के पास एसे छुटभैया नेता की बड़ी फौज है। सभी छूटभैया नेताओं पर आकाओं का हाथ होता हैं। क्योंकि उनको पता है कि इन्हीं छुटभैया नेताओं के कारण नेताओं की कुर्सी बची हुई है। अधिकतर छुटभैया नेताओं की आर्थिक स्थिति भी इतनी अच्छी नहीं है कि वह पार्षद का भी चुनाव लड़ सकें परंतु सोशल मीडिया के माध्यम से वह अन्य नेताओं के समक्ष उनकी बराबरी करते हैं।

अक्सर देखने में ऐसा आया है कि ऐसे छुटभैया पैसे के लोभ के लिए चुनाव में खड़े होते हैं व पैसे लेकर किसी नेता की शरण में चले जाते हैं। निगम चुनाव की अभी घोषणा नहीं हुई है, देखना यह होगा कि ऐसे कितने नेता टिकट लेने में कामयाब होंगे कितने पैसे लेकर दूसरे नेताओं की गोदी में बैठेंगे व कितने मैदान छोड़कर जाएंगे।